समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation









कक्षा - 7

हिंदी (पल्लव)

अध्याय – 10

स्वाधीनता संग्राम में पूर्वोत्तर की वीरांगनाएँ

भाग – 1

मिताली कुमारी

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

सातवीं कक्षा के कुछ विद्यार्थी शिक्षामूलक भ्रमण समाप्त करके तेजपुर से कल ही लौट आए थे। दोपहर का विराम चल रहा था। तेजपुर जाने वाले और वहाँ न जा पाने वाले विद्यार्थियों में बातचीत चल रही थी। ईशान ने वहाँ की कनकलता की मूर्ति के बारे में बताया। उसने यह भी बताया कि वीरांगना कनकलता ने किस प्रकार अपने देश को अंग्रेज शासन से मुक्त कराने के लिए स्वतंत्रता संग्राम में अपने प्राणों का बलिदान किया था।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



उनकी बातचीत चल ही रही थी कि इतने में अध्यापक बरामदे से गुजरे। बच्चा की बातें सुनकर वे उनके पास आए।

अध्यापक : क्या कर रहे हो तुमलोग? कनकलता की बात हो रही थी क्या ?

अनिकेत : ईशान हमें तेजपुर में स्थित कनकलता की मूर्ति के बारे में बता रहा था, गुरुजी।

अध्यापक : बहुत अच्छी बात है। तुमलोग तो जानते ही हो कि हमारा देश लगभग दो सौ वर्ष तक अंग्रेजों के अधीन था।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



मीना : जी हाँ, गुरुजी। 15 अगस्त, 1947 ई. को हमारा देश अंग्रेजी सरकार के शासन से आजाद हुआ था।

अध्यापक : हमारे देशवासियों को आजादी के लिए सालों संघर्ष करना पड़ा। आजादी की इस लड़ाई में हमारे देश के अनेक लोग शहीद हुए।

ईशान : और हमारे असम की कनकलता भी उनमें से एक थी, है न गुरुजी ?

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



अध्यापक : हाँ ! देश के अन्य प्रांतों की तरह हमारे असम के लोगों ने भी अंग्रेजों से आजाद होने के लिए गाँधीजी के मार्ग-दर्शन में अहिंसक आंदोलन में भाग लिया था। गाँधीजी के नेतृत्व में 1942 ई. में 'भारत छोड़ो' आंदोलन चला था। इस आंदोलन के दौरान तेजपुर के पास गहपुर नामक जगह में थाने पर हमारा तिरंगा फहराने के लिए लोग जुलूस बनाकर आए थे। इस जुलूस के सबसे आगे तिरंगा लेकर बढ़ रही थी कनकलता।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

पुलिस ने जुलूस को रोका। परंतु कनकलता के मन में आजादी की धून सवार थी। वह झंडा फहराए बिना कैसे लौट जाए? वह आगे बढ़ी, तो गुस्से में लाल-पीला होकर पुलिस के दारोगा ने उस पर गोली चला दी। कनकलता देश की आजादी के लिए शहीद हो गई।

मनु : गुरुजी, कनकलता की तरह क्या असम की और भी किसी नारी ने आजादी की लड़ाई में भाग लिया था ?

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

अध्यापक : हाँ! देश की आजादी की लड़ाई में असम की वीरांगनाएँ भी पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ी थीं। कनकलता के अतिरिक्त भोगेश्वरी फुकननी, अमलप्रभा दास, पुष्पलता दास, चंद्रप्रभा शइकीयानी आदि महीयसी नारियों के अवदान भी इस आंदोलन में उल्लेखनीय हैं।

मूल्यांकन



1 | 20 अगस्त, 1947 ई. को हमारा देश अंग्रेजी सरकार के शासन से आजाद हुआ था ।

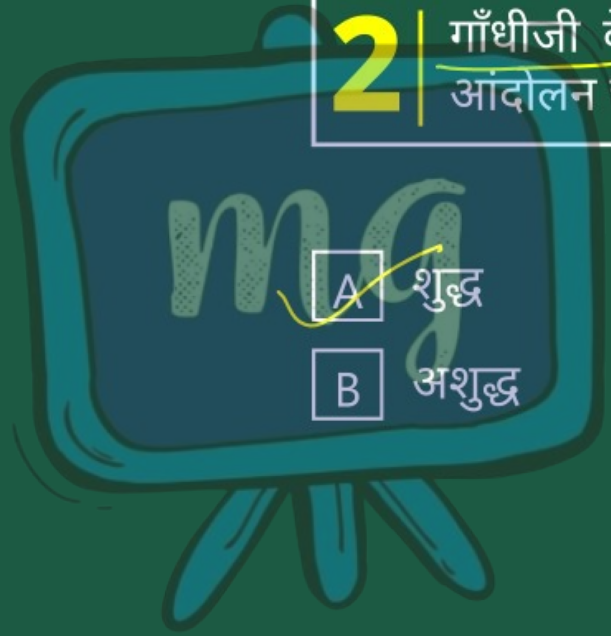
A शुद्ध

B अशुद्ध

मूल्यांकन



2 | गाँधीजी के नेतृत्व में 1942 ई. में 'भारत छोड़ो' आंदोलन चला था।



मूल्यांकन



3 | कनकलता देश की आजादी के लिए शहीद हो गई ।

